8 माँ ! कह एक कहानी

Y7C6C4

मैथिलीशरण गुप्त

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 में चिरगाँव, जिला झांसी (उ.प्र.) में हुआ था। बचपन से ही कविता में उनकी रुचि थी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से वे खड़ीबोली की ओर मुड़े और उनकी कविता में निखार आया। उन्होंने अपनी कविताओं में भारतीय जीवन को समग्रता से समझने एवं प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। खड़ीबोली हिन्दी के आरंभिक उन्नायकों में से एक थे। 'साकेत' गुप्तजी द्वारा लिखित महाकाव्य है, इसके अतिरिक्त 'यशोधरा', 'पंचवटी', 'भारत भारती' तथा 'जयद्रथ वध' आदि इनकी मख्य काव्य कृतियाँ हैं। इनकी मृत्यु सन् 1964 में हुई।

मारनेवाले से बचानेवाला बड़ा होता है, यह उक्ति चरितार्थ हुई है, गौतम बुद्ध के जीवन से। संवाद शैली की इस कविता में गौतम बुद्ध के बचपन की एक घटना का उल्लेख है, जिसमें उनका पुत्र राहुल माँ यशोधरा से राजकुमार सिद्धार्थ की उसी कहानी को दोहराने का आग्रह करता है, जिससे उपर्युक्त उक्ति परिभाषित हुई थी।

''माँ ! कह एक कहानी।''

''बेटा, समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी ?''

''कहती है मुझसे यह चेटी,
तू मेरी नानी की बेटी !
कह माँ ! कह, लेटी ही लेटी,
राजा था या रानी ?
माँ, कह एक कहानी।''

''तू है हठी, मानधन मेरे,
सुन, उपवन में बड़े सवेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ सुरभि मनमानी।''

''जहाँ सुरभि मनमानी ?
हाँ, माँ यही कहानी''

''वर्णवर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे,
हलके झोंके हिले-मिले थे,
लहराता था पानी।''

''लहराता था पानी ?
हाँ, हाँ, यही कहानी।''

''गाते थे खग कल-कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से,
गिरा, बिद्ध होकर खग-शर से।
हुई पक्ष की हानी!''

''हुई पक्ष की हानी ?
करुणा भरी कहानी !''

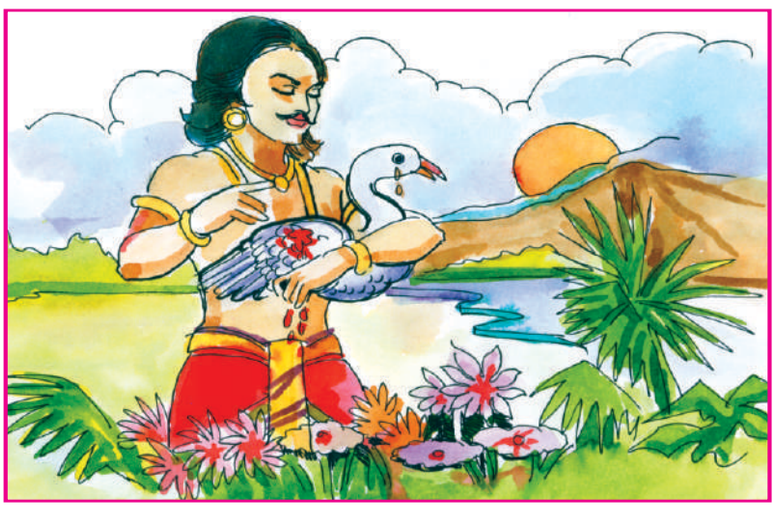

''चौंक उन्होंने उसे उठाया,
नया जन्म-सा उसने पाया।
इतने में आखेटक आया,
लक्ष्य सिद्धि का मानी।''

''लक्ष्य सिद्धि का मानी ?
कोमल कठिन कहानी।''

''माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किंतु थे रक्षी।
तब उसने जो था खगभक्षी,
हठ करने की ठानी।''

''हठ करने की ठानी ?
अब बढ़ चली कहानी।''

''हुआ विवाद सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में,
गयी बात तब न्यायालय में,
सुनी सभी ने जानी।''

''सुनी सभी ने जानी ?
व्यापक हुई कहानी।''

''राहुल, तू निर्णय कर इसका –
न्याय पक्ष लेता है किसका ?
कह दे निर्भय, जय हो जिसका।
सुन लूँ तेरी बानी।''

''माँ, मेरी क्या बानी ?
मैं सुन रहा कहानी।''

''कोई निरपराध को मारे
तो क्यों अन्य न उसे उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी।''

''न्याय दया का दानी ?
तूने सुनी कहानी।''

– मैथिलीशरण गुप्त

शब्दार्थ

सुरभि सुगंध **झलमल** चमक **शर** तीर **पक्ष** पंख **आखेटक** शिकारी **आहत** चोट खाया हुआ

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) राहुल के पिताजी कहाँ भ्रमण कर रहे थे? कब?

(2) आखेटक ने राहुल के पिताजी से क्या माँगा ?

(3) उपवन की शोभा कैसी थी ?

(4) माँ से कहानी सुनकर पुत्र ने क्या निर्णय सुनाया ?

(5) प्रस्तुत कथा काव्य का सार लिखिए।

2. रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर वाक्यों को दुबारा लिखिए :

(1) लड़की ने नई सलवार पहनी है।

(2) अध्यापक ने छात्र को कहानी सुनाई।

(3) प्रधानमंत्री ने अपने मंत्री से देश की समस्या पर बातचीत की।

(4) इस पत्रिका में जो कविता छपी है, वह बहुत मनोरंजक है।

(5) लू चलने के कारण लता सूख गई है।

N1V9Z4

स्वाध्याय

1. काव्य पंक्तियों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए :

(1) ''वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे,
हलके झोंके हिले-मिले थे,
लहराता था पानी।''

''लहराता था पानी ?
'हाँ, हाँ, यही कहानी।''

(2) ''तू है हठी, मानधन मेरे,
सुन, उपवन में बड़े सवेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ सुरभि मनमानी।''

''जहाँ सुरभि मनमानी ?
'हाँ, माँ यही कहानी।'

2. चित्र के आधार पर अपूर्ण काव्य को पूर्ण कीजिए :

माँ मुझ को भी पौधा दे दे
मैं भी वृक्ष लगाऊँगा.....

_____

_____

3. एक दिन अकबर ने बीरबल से पूछा: ''बीरबल दुनिया में सबसे अधिक शक्तिशाली कौन है ? बीरबल ने क्या कहा होगा ? सोचकर कहानी को आगे बढ़ाइए।

4. अगर पाठशाला के सामने दुर्घटना हुई तो आप क्या करेंगे ?

5. इस कविता को कहानी के रूप में लिखिए।

भाषा-सञ्जता

➔ क्रिया का काल

● **इन वाक्यों को पढ़िए तथा क्रियापदों पर ध्यान दीजिए :**

(1) मेरा प्रताप ही ऐसा है।

(2) तू मेरी बुद्धि को कुंद बताकर मेरा अपमान कर रहा है।

(3) तुम्हारा बाहर आना खतरे से खाली नहीं, फिर भी तुम बाहर आ गए।

(4) वह खान के भीतर रहता था।

(5) उनकी (लोहा दादा की) एक चपत से तेरी सारी शान चंपत हो जाएगी।

(6) वह रात में पढ़ाई करेगा।

- पहले दूसरे वाक्य में क्रियापद '**है**', **तथा** '**कर रहा है**' से स्पष्ट हो रहा है कि ये '**वर्तमानकाल**' के वाक्य हैं।
- तीसरे, चौथे वाक्य में '**आ गए**' **तथा** '**रहता था**' क्रियापद द्वारा क्रिया के हो चुकने का संकेत मिलता है। क्रिया का यह काल '**भूतकाल**' कहलाता है।
- पाँचवें तथा छठे वाक्य में क्रियापद '**हो जाएगी**' तथा '**करेगा**' बताते हैं की क्रिया निकट भविष्य में होनेवाली है, वह न तो भूतकाल में पूरी हुई है, न ही वर्तमान में हो रही है। क्रिया के इस काल को '**भविष्यकाल**' कहते हैं।
- इस तरह क्रिया के तीन काल होते हैं :

(1) वर्तमानकाल (2) भूतकाल (3) भविष्यकाल

याद रखें : (क्रियापद के अंतिम अंश को देखकर)

है, हैं, हो, हूँ, 'वर्तमान' है,
आ, ए, ई, था, थे, थी, भूत
गा, गे, गी, को, 'भविष्य' जानो,
लो बच्चों, अब काल पहचानो।

- **निम्नलिखित वाक्यों के क्रियापदों को देखकर उनके काल पहचानकर लिखिए :**

(1) रजत गा नहीं रहा था, कविता बना रहा था।

(2) हाँ भैया, अब मैं तेरी बात मानूँगा।

(3) मैं मौन रहकर तुम्हारी सेवा करना चाहता हूँ।

(4) तुम्हें देखकर मेरा हृदय शीतल होता है।

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर समझिए :**

(1) मैनें किताब खरीदी। (भूतकाल)

(2) मैं किताब खरीदूँगा। (भविष्यकाल)

(3) मैं किताब खरीद रहा हूँ। (वर्तमानकाल)

- **निम्नलिखित वाक्यों को सूचना के अनुसार फिर से लिखिए :**

(1) मैं अहमदाबाद जा रहा हूँ। (भविष्यकाल बनाइए)

(2) मेहुल मुंबई गया था। (वर्तमानकाल बनाइए)

(3) गीता आइस्क्रीम खाएगी। (भूतकाल बनाइए)

योग्यता-विस्तार

- पाठशाला के पुस्तकालय से मैथिलीशरण गुप्तजी की पुस्तकें लेकर उनकी अन्य कविताएँ पढ़िए।
- विभिन्न कविताओं का संकलन कीजिए।
- अपनी माँ, परिजन या शिक्षक से कोई कहानी सुनकर उसे कविता के रूप में लिखिए।